4

फर्म का समापन

Dissolution of Firm

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के बाद आप –

- ❖ फर्म के समापन एवं साझेदारी के समापन का अर्थ बता पाएंगे तथा अन्तर कर पाएंगे।
- ❖ फर्म के समापन पर खोले जाने वाले वसूली खाते का निर्माण कर पाएंगे।
- ❖ फर्म के समापन पर लेखांकन प्रविष्टियाँ बनाकर खाते बना पाएँगे।
- ❖ एक साझेदार या सभी साझेदारों के दिवालिया होने पर ''गार्नर बनाम मरे'' का नियम लागू करते हुए व न करते हुए लेखांकन कर पाएंगे।

फर्म के समापन का अर्थ (Meaning of Dissolution of the firm)

भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 39 के अनुसार ''किसी फर्म के समस्त साझेदारों के मध्य साझेदारी का समाप्त हो जाना फर्म का विघटन या फर्म का समापन कहलाता है।''

जब एक फर्म के सभी साझेदारों के बीच साझेदारी समाप्त हो जाए तो उसे फर्म का समापन कहते हैं। फर्म का समापन होने पर फर्म की सभी सम्पत्तियाँ विक्रय कर दी जाती हैं और दायित्वों का भुगतान कर दिया जाता है। उसके बाद यदि शेष बचा हो तो साझेदारों को उनके खातों के अन्तिम निपटारे के रुप में भुगतान कर दिया जाता है।

साझेदारी समापन का अर्थ (Meaning of Dissolution of Partnership)

साझेदारी समापन का अर्थ यही है कि एक साझेदार का अन्य साझेदारों के साथ सम्बन्ध टूट जाता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक नहीं हैं कि फर्म का कारोबार बन्द हो जाए। शेष साझेदार चाहे तो फर्म का कारोबार चालू रख सकते हैं।

उदाहरण :– एक साझेदार की मृत्यु होने, उसके दिवालिया होने, अवकाश ग्रहण करने, निर्धारित अवधि या कार्य समाप्त होने पर साझेदार का समापन हो जाता है, परन्तु फर्म का समापन किया जाए या नहीं, यह साझेदारों द्वारा समझौते पर निर्भर करता है अतः साझेदारी का समापन फर्म का समापन नहीं है। साझेदारी की समाप्ति के बाद फर्म अपना व्यापार चालू रख सकती हैं, फर्म की समाप्ति साझेदारी की समाप्ति है। फर्म की समाप्ति में व्यापार की सभी क्रियाएँ समाप्त हो जाती है।

निम्न परिस्थितियों में फर्म तथा साझेदारी दोनों का समापन हो जाता हैं:–

(1) जब सभी साझेदार फर्म को समाप्त करने का समझौता कर लें।
(2) जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर अन्य सभी साझेदार दिवालिया घोषित हो जाये।
(3) जब फर्म का कारोबार अवैध हो जावें।
(4) जब किसी साझेदार ने ऐच्छिक साझेदारी को समाप्त करने की सूचना अन्य साझेदारों को दे दी हो।
(5) जब न्यायालय द्वारा फर्म के समापन का आदेश दिया हो।

समापन के प्रकार (Modesa of Dissolution)

साझेदारी फर्म के समापन की परिस्थितियाँ :– भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 40–44 के अनुसार फर्म निम्नलिखित परिस्थितियों में समाप्त हो जाती हैं :–

(1) समझौते द्वारा समापन (Dissolution by Agreement):- साझेदार स्वेच्छा से किसी भी समय साझेदारी की समाप्ति कर सकते हैं।

(2) अनिवार्य समापन (Compulsory Dissolution):- निम्नलिखित परिस्थितियों में फर्म अनिवार्य रुप से समाप्त हो जाती है–

- **(i)** यदि फर्म का व्यापार अवैध हो।
- **(ii)** यदि कोई भी साझेदार शत्रु देश का नागरिक हो।
- **(iii)** यदि एक साझेदार के अलावा सभी साझेदार दिवालिया हो।
- **(iv)** यदि साझेदारों की अधिकतम संख्या सामान्य साझेदारी में 20 व बैंकिंग व्यवसाय में 10 से अधिक हो।

(3) नोटिस द्वारा समापन (Dissolution by Notice):- यदि साझेदारी स्वेच्छा पर निर्भर करती हो तो किसी भी साझेदार द्वारा समापन का नोटिस दिये जाने पर साझेदारी समाप्त हो जाती हैं।

(4) न्यायालय द्वारा समापन (Dissolution by Court):- किसी भी साझेदार के आवेदन पर न्यायालय निम्नलिखित परिस्थितियों में फर्म के समापन का आदेश दे सकता है–

- **(i)** यदि कोई भी साझेदार मानसिक रुप से अस्वस्थ हो।
- **(ii)** यदि कोई भी सक्रिय साझेदार स्थायी रुप से अपाहिज हो जाए और साझेदार के रुप में अपना कार्य करने में असमर्थ हो।
- **(iii)** यदि कोई भी साझेदार दुराचार का दोषी हो जो कि फर्म के व्यापार को प्रभावित करे।

(iv) यदि कोई साझेदार जान बूझकर प्रसंविदे की अवहेलना करे।
(v) यदि फर्म को व्यापार से केवल हानि ही होने की शंका हो।
(vi) यदि कोई साझेदार फर्म में अपने हित को किसी तीसरे पक्ष को हस्तान्तरित कर दे।
(vii) यदि न्यायालय किसी भी उचित कारण से सन्तुष्ट हो।

(5) विशेष घटना के होने पर समापन (Dissolution on the happening of certain contingencies) :— इसमें निम्नलिखित घटनाओं के होने पर फर्म की समाप्ति हो सकती है :—

(i) साझेदारी यदि किसी विशेष अवधि के लिए है तो अवधि समाप्ति पर।
(ii) साझेदारी यदि किसी विशेष कार्य के लिए स्थापित की गई हो तो उस कार्य के पूर्ण होने पर।
(iii) किसी भी साझेदार की मृत्यु होने पर।
(iv) किसी भी साझेदार के न्यायालय द्वारा दिवालिया घोषित होने पर।

साझेदारी और साझेदारी फर्म के समापन में अन्तर

आधार	साझेदारी का समापन	साझेदारी फर्म का समापन
(1) अर्थ	साझेदारी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच के लाभ के लिए कानूनी व्यापार करने का अनुबन्ध है। इस प्रकार अनुबन्ध में किसी भी कारण से परिवर्तन साझेदारी की समाप्ति है।	साझेदारी फर्म के समापन का अर्थ फर्म द्वारा व्यापारिक क्रियाओं की समाप्ति है।
(2) स्थितियाँ	किसी साझेदार के प्रवेश करने, अवकाश ग्रहण करने, मृत्यु होने पर लाभ–हानि अनुपात में परिवर्तन या अन्य किसी कारण से अनुबन्ध में परिवर्तन साझेदारी को समाप्त कर सकता है।	साझेदारी फर्म का समापन साझेदार की अपनी इच्छा से एवं न्यायालय के आदेश पर हो सकता है।
(3) व्यवसाय का जारी रहना	साझेदारी की समाप्ति के बाद भी फर्म उसी नाम से व्यवसाय कर सकती है।	फर्म की समाप्ति पर व्यावसायिक क्रियाएँ जारी नहीं रहती हैं।
(4) समाप्ति	साझेदारी की समाप्ति से साझेदार फर्म की समाप्ति का होना आवश्यक नहीं है।	साझेदारी फर्म की समाप्ति होने से साझेदारी स्वतः समाप्त हो जाती है।

फर्म के समापन पर खातों को बन्द करने की वैधानिक व्यवस्था

फर्म के समापन पर खातों को बन्द करने के लिए निम्नलिखित वैधानिक व्यवस्था है :—

(अ) सभी हानियों और कमियों को सबसे पहले लाभ से, बाद में पूँजी और अन्त में साझेदारों द्वारा अतिरिक्त राशि लाकर पूरा किया जाता है।

(ब) सम्पत्तियों को बेचने से प्राप्त राशि एवं साझेदारों द्वारा लाई गई राशि का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है–

(i) सुरक्षित ऋण का भुगतान।
(ii) बाहर के पक्षों के ऋण का भुगतान करने में (आनुपातिक)।
(iii) साझेदारों द्वारा दिए गए ऋण का भुगतान करने में (आनुपातिक)।
(iv) साझेदारों का पूँजी शेष वापस करने में (आनुपातिक)।
(v) यदि अब भी कुछ शेष हो तो उसे साझेदारों में उनके लाभ विभाजन अनुपात में बाँटकर।

फर्म की समाप्ति पर सम्पत्तियों को बेचने से प्राप्त राशि से सर्वप्रथम बाहरी पक्षों के ऋणों का भुगतान होता है। अतिरिक्त राशि का उपयोग साझेदारों के ऋणों के भुगतान में और अन्त में साझेदारों को उनकी पूँजी वापस की जाती है। साझेदारों के निजी ऋणों का भुगतान उनकी निजी सम्पत्ति से होता हैं। निजी दायित्व का भुगतान करने के बाद यदि शेष बचता हैं तो उसे फर्म के ऋणों के भुगतान में उपयोग किया जाता है। (धारा–49)

साझेदारी अधिनियम 1932 की धारा 48 के अनुसार साझेदारों के खातों का निपटारा करते समय अपनाए जाने वाले नियम (Provision of section 48 of Partnership Act, 1932 relating to settlement of accounts at the time of dissolution) :-

(1) सभी हानियों का जिसमें पूँजी की कमी भी शामिल हो इस प्रकार भुगतान किया जायेगा :—

a) सर्वप्रथम लाभ से किया जायेगा।
b) उसके बाद पूँजी से किया जायेगा।
c) अन्त में यदि आवश्यक हुआ तो साझेदारों द्वारा उनके लाभ विभाजन अनुपात में लाया जायेगा।

(2) फर्म की सभी सम्पत्तियों, जिसमें साझेदार द्वारा लाई गई नकद राशि भी शामिल है, उनका उपयोग निम्नलिखित प्रकार से होगा–

a) फर्म के सभी कर्जों का भुगतान करने में जिसमें साझेदारों की पत्नी का भी ऋण शामिल है, उसका भुगतान करने में।
b) प्रत्येक साझेदार की पूँजी का आनुपातिक रुप से भुगतान करने में।

(3) अतिरिक्त राशि यदि कोई हो तो साझेदारों के बीच लाभ विभाजन अनुपात में बाँटी जायेगी। दूसरे शब्दों में यह सारांश निकाला जा सकता हैं कि उपलब्ध राशि का भुगतान निम्न क्रम से किया जावेगा।

a) सम्पत्तियों को बेचने और ऋण की वसूली में किये गए खर्चों के भुगतान के लिए।
b) बाहर के दायित्वों जिनमें साझेदार की पत्नी का ऋण भी शामिल है, का भुगतान करने के लिए।

c) साझेदार के ऋणों का भुगतान करने के लिए।
d) साझेदारों की पूँजी की वापसी के लिए।
e) यदि ऊपर के सभी a से d तक के दावों का भुगतान कर दिया जाता है तो शेष राशि साझेदारों में लाभ विभाजन अनुपात में बाँटने के लिए। (धारा–48)

फर्म के समापन पर की जाने वाली लेखांकन क्रियाएँ

फर्म के समापन की तिथि से सामान्य व्यापारिक कार्य बन्द हो जाता है तथा फर्म की सम्पत्तियों से वसूली करने और दायित्वों का भुगतान करने की कार्यवाही प्रारम्भ हो जाती है। इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए निम्नलिखित खाते तैयार किए जाते हैं–

(a) वसूली खाता **(b)** बैंक अथवा रोकड खाता **(c)** साझेदारों के पूँजी खाते **(d)** अन्य आवश्यक खाते

वसूली खाता (Realisation Account)

फर्म के समापन पर फर्म की सम्पत्तियों के विक्रय पर राशि वसूल की जाती है तथा उससे फर्म के दायित्वों का भुगतान किया जाता है। इस कार्य के लिए फर्म की पुस्तकों में एक विशेष खाता खोला जाता है जिसे वसूली खाता कहते हैं। यह एक नाम मात्र का खाता होता है। इस खाते को बनाने का उद्देश्य सम्पत्तियों के विक्रय तथा दायित्वों के भुगतान से होने वाले लाभ–हानि को ज्ञात करना होता है।

रोकड़ व बैंक शेष, साझेदारों के ऋण संचय एवं अवितरित लाभ तथा साझेदारों के चालू एवं पूँजी खातों के शेष को छोड़कर अन्य समस्त सम्पत्तियों एवं दायित्वों को इस खाते में अन्तरित कर दिया जाता है जिससे सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खाते बन्द हो जाते हैं। सम्पत्तियों के विक्रय से प्राप्त राशि, किसी साझेदार द्वारा ली गई सम्पत्ति, दायित्वों के भुगतान एवं समापन व्यय सम्बन्धी लेखे भी इस खाते में किए जाते हैं। इस खाते का शेष वसूली पर लाभ अथवा हानि प्रदर्शित करता है। जिसे लाभ विभाजन अनुपात में बाँटकर साझेदारों के चालू अथवा पूँजी खाते में अन्तरित कर दिया जाता है।

वसूली खाते तथा पुनर्मूल्यांकन खाते में अन्तर
(Difference between Realisation Account and Revaluation Account)

आधार	वसूली खाता	पुनर्मूल्यांकन खाता
1.उद्देश्य	वसूली खाता फर्म के समापन पर सम्पत्तियों के विक्रय से वसूली तथा दायित्वों के भुगतान से सम्बन्धित व्यवहारों का लेखा करने के लिए बनाया जाता है।	पुनर्मूल्यांकन खाता किसी नये साझेदार के प्रवेश अथवा किसी साझेदार के अवकाश ग्रहण करने या उसकी मृत्यु पर सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन के कारण मूल्यों में कमी अथवा वृद्धि का लेखा करने के लिए बनाया जाता है।
2.अनिवार्यता	फर्म के समापन के समय वसूली खाता खोलना अनिवार्य होता है।	फर्म के संगठन में परिवर्तन होने पर पुनर्मूल्यांकन खाता खोले बिना भी लाभ अथवा हानि का समायोजन किया जा सकता है।
3. तैयार करने का समय	वसूली खाता फर्म के समापन पर फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए बनाया जाता है।	पुनर्मूल्यांकन खाता फर्म के चालू रहने पर फर्म के संगठन में परिर्वतन के फलस्वरुप तैयार किया जाता है।
4.व्यय	फर्म के समापन पर वसूली के सम्बन्ध में कुछ व्यय किए जाते हैं, जिनसे वसूली खाता डेबिट किया जाता है।	फर्म के संगठन में परिवर्तन के फलस्वरुप सम्पत्ति एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन संस्था के लेखापालों द्वारा ही किया जाता है, अतः किसी प्रकार का कोई व्यय नहीं होता है।
5. लेखा प्रविष्टियाँ	वसूली खाते के डेबिट पक्ष में रोकड़ तथा बैंक शेष के अलावा समस्त सम्पत्तियों का शेष तथा क्रेडिट पक्ष में पूँजी संचय, अवितरित लाभ तथा साझेदारों के ऋणों को छोडकर अन्य दायित्वों के शेष अन्तरित कर दिए जाते है।	पुनर्मूल्यांकन खाते के डेबिट पक्ष में सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी, दायित्वों के मूल्य में वृद्धि व संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान तथा क्रेडिट पक्ष में सम्पत्तियों के मूल्य में वृद्धि तथा दायित्वों के मूल्य में कमी अंकित की जाती है।

समापन सम्बन्धी लेखा प्रविष्टियाँ (Accounting Entries Regarding Dissolution)

1. सम्पत्तियों के हस्तान्तरण पर (रोकड व बैंक शेष के अलावा) –

Realisation Account Dr.
To Sundry Assets A/c
(Balance of Assets transferred)

(प्रत्येक सम्पत्ति के चिट्ठे में दिए गए मूल्य से प्रत्येक खाते का नाम क्रेडिट किया जावेगा।)

2. दायित्वों के हस्तान्तरण पर (साझेदारों की पूँजी, ऋण, चालू खाते, सामान्य संचय, लाभ–हानि खाता, संचय कोष को छोडकर)–

Sundry Liabilities A/c Dr.
To Realisation A/c
(Balance of Sundry Liabilities transferred)

(चिट्ठे में दिए गए मूल्य से प्रत्येक खाते को अलग–अलग नाम से डेबिट किया जावेगा।)

3. सम्पत्तियों के विक्रय करने पर –

Cash / Bank A/c Dr.
To Realisation A/c
(Cash realised from sale of assets)
(सम्पत्तियों के विक्रय मूल्य की राशि से)

4. साझेदार द्वारा किसी सम्पत्ति को लेने पर –

Partner's Capital A/c Dr.
To Realisation A/c
(Assets taken over by the Partner)
(अनुबन्ध द्वारा निर्धारित मूल्य से)

5. हस्तान्तरित दायित्त्वों का नकद भुगतान करने पर –

Realisation A/c Dr.
To Cash / Bank A/c
(Sundry liabilities paid off)
(भुगतान की गयी राशि से)

6. साझेदार द्वारा किसी दायित्व के भुगतान का भार वहन करने पर –

Realisation A/c Dr.
To Partner's Capital A/c
(Liabilities taken over by the Partner's)
(अनुबन्ध द्वारा निर्धारित राशि से)

7. विघटन सम्बन्धी व्यय एवं सम्भावित दायित्वों का भुगतान –

Realisation A/c Dr.
To Cash / Bank A/c
(Expenses paid)
(भुगतान की गयी राशि से)

8. वसूली खाते का क्रेडिट शेष (जमा) होने पर –

Realisation A/c Dr.
To Partner's Capital A/c
(Profit transferred to Capital A/c)
(लाभ विभाजन अनुपात में)

9. वसूली खाते का डेबिट शेष (हानि) होने पर –

Partner's Capital A/c Dr.
To Realisation A/c
(Loss transferred to Capital A/c)
(लाभ विभाजन अनुपात में)

10. फर्म के लिए वसूली व्यय का भुगतान किसी साझेदार द्वारा करने पर –

Realisation A/c Dr.
To Partner's Capital A/c
(Expenses paid by Partner)
(साझेदार द्वारा भुगतान की गई राशि)

नोट : यदि साझेदार द्वारा निजी रुप से वसूली व्यय वहन करने हो तो फर्म की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं होगी।

11. वसूली व्यय किसी साझेदार द्वारा वसूली एजेन्ट के रुप में वहन करने पर उसे देय कमीशन की राशि से –

Realisation A/c Dr.
To Partner's Capital A/c
(Commission allowed to partner)
(देय कमीशन/पारिश्रमिक की राशि से)

विशेष टिप्पणी :– कभी–कभी दायित्वों को वसूली खाते में हस्तान्तरित नहीं किया जाता है, ऐसी स्थिति में इन दायित्वों का सीधा भुगतान कर, यदि इसमें कोई लाभ अथवा हानि होती है तो केवल इस लाभ अथवा हानि को ही वसूली खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इसका लेखांकन निम्न प्रविष्टियों से किया जा सकता है –

12. दायित्व का पुस्तक मूल्य से अधिक भुगतान करने पर –

Sundry Liabilities A/c	Dr.	(पुस्तक मूल्य)
Realisation A/c	Dr.	(अन्तर की राशि)
To Cash / Bank A/c		(भुगतान की गई राशि)

(Liabilities paid off & loss transferred)

13. दायित्वों को पुस्तक मूल्य से कम भुगतान करने पर –

Sundry Liabilities A/c	Dr.	(पुस्तक मूल्य)
To Cash / Bank A/c		(भुगतान की गई राशि)
To Realisation A/c		(अन्तर की राशि)
(Sundry Liabilities paid off & profit transferred)		

नोट : (1) चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष की निम्नांकित मदें वसूली खाते में हस्तान्तरित नहीं करते है। रोकड व बैंक शेष, लाभ हानि खाते का नामें शेष, स्थगित आयगत व्यय।इन्हें सीधे पूँजी खाते में लाभ–हानि अनुपात में हस्तान्तरित किया जाता है।
(2) चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाए गए पूँजी खाते, संचय कोष, लाभ–हानि खाते के जमा पक्ष का शेष, अवितरित लाभों, सामान्य संचयों को वसूली खाते में नहीं ले जाते है। संचय कोष, लाभ–हानि खाता के जमा पक्ष का शेष, सामान्य संचयों, अवितरित लाभों को लाभ विभाजन अनुपात में पूँजी खातें में बाँटकर दिखाया जायेगा।
(3) साझेदारों की निजी सम्पत्तियाँ पहले निजी ऋणों को चुकाने में काम लेंगे। तत्पश्चात् बची हुई निजी सम्पत्ति फर्म के दायित्व चुकाने के काम ले सकते हैं, यदि फर्म के दायित्व उसकी सम्पत्तियों से अधिक हों।
(4) बाहरी दायित्त्वों के भुगतान के लिए प्रश्न में कुछ नहीं कहा हो तो पुस्तक मूल्य का भुगतान माना जायेगा।
(5) सम्पत्तियों के वसूली मूल्य की सूचना न होने पर मूल्यहीन मानी जाएगी।

14. साझेदार के ऋण का भुगतान करने पर –

Partner's Loan A/c	Dr.	(भुगतान की गई राशि)
To Cash / Bank A/c		
(Loan paid off)		

15. पुराने अविभाजित लाभों को बाँटने पर –

General Reserve A/c	Dr.	(भुगतान की गई राशि)
Reserve Fund A/c	Dr.	
Profit & Loss A/c	Dr.	
To Partner's Capital A/c		(लाभ विभाजन अनुपात से)
(Undistributed profit transferred)		

16. पुरानी अविभाजित हानि को विभाजित करने पर –

Partner's Capital A/c	Dr.	(लाभ विभाजन अनुपात से)
To Profit & Loss A/c		(अवितरित हानि से)
(Undistributed loss transferred)		

17. किसी साझेदार द्वारा उसकी पूँजी की कमी की पूर्ति करने पर –

Cash / Bank A/c	Dr.	(लाई गई राशि से)
To Partner's Capital A/c		
(Cash broughat by Partner's)		

18. साझेदारों के पूँजी के शेष का भुगतान उनके द्वारा प्राप्त करने पर –

Partner's Capital A/c	Dr.	(भुगतान की गई राशि से)
To Cash / Bank A/c		
(Balance of Capital Account paid)		

विशेष टिप्पणी :– अन्त में फर्म में रोकड़ तथा बैंक शेष की कुछ राशि उतनी ही होती है जितनी की साझेदार को भुगतान करनी होती है, अतः अन्तिम प्रविष्टि के पश्चात् फर्म के समस्त खाते स्वतः ही बन्द हो जायेंगे।

पुस्तकों में नहीं दिखाई गई सम्पत्तियाँ व दायित्व :–

1. कुछ सम्पत्तियाँ भौतिक रुप से विद्यमान होते हुए भी पुस्तकों में पूर्ण रुप से अपलिखित हो जाने के कारण पुस्तकों में नहीं दिखाई जाती है। लेकिन इन्हें विक्रय करने से कुछ राशि प्राप्त हो सकती है। क्योंकि ये अभी भी कार्यशील स्थिति में होती है। उनकी केवल वसूली की प्रविष्टि की जाती है। इसी प्रकार कुछ ऐसे दायित्व भी हो सकते हैं, जो पुस्तकों में विद्यमान नहीं होते हैं, परन्तु उनका भुगतान करना आवश्यक हो सकता है, जैसे भुनाये गए प्राप्त विपत्र, किसी गारण्टी अथवा प्रस्तुत वाद के सम्बन्ध में उत्पन्न दायित्व, इन्हें संदिग्ध दायित्व कहते हैं। इन सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुस्तकों में कोई खाता न होने के कारण इनको वसूली खाते में अन्तरित करने का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता है किन्तु राशि वसूल होने व भुगतान की प्रविष्टि की जाती है। इनके सम्बन्ध में लेखा प्रविष्टियाँ आगे दी गयी हैं–

I. ऐसी सम्पत्ति की बिक्री करने पर –

Cash / Bank A/c	Dr.	(बिक्री से प्राप्त राशि)
To Realisation A/c		
(Cash realised from assets)		

II. ऐसे दायित्वों का भुगतान करने पर –

Realisation A/c	Dr.	(वास्तविक भुगतान की राशि से)
To Cash / Bank A/c		
(Contingent Liabilites paid)		

2. पुस्तकों में नहीं दिखाई गई सम्पत्ति का पुस्तकों में नहीं दिखाये गये दायित्व के भुगतान के प्रयोग में लेने पर कोई प्रविष्टि नहीं होगी।
3. पुस्तकों में दिखाई गई सम्पत्ति का पुस्तकों में दिखाये गये दायित्व के भुगतान में सीधे प्रयोग लेने पर कोई प्रविष्टि नहीं होगी।
4. पुस्तकों में दर्ज न की गई सम्पत्ति, पुस्तक में दर्ज किये गये दायित्व के भुगतान में काम लेने पर कोई प्रविष्टि नहीं होंगी किन्तु यदि उस दायित्व का कुछ भाग बच जाता है तो उसके भुगतान की प्रविष्टि पूर्ववत होगी।
5. पुस्तकों में दर्ज की गई सम्पत्ति, पुस्तक में न दर्ज किये गये दायित्व के भुगतान में प्रयोग लेने पर कोई प्रविष्टि नहीं होंगी।

साझेदारी समापन में ख्याति का लेखांकन

1) यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति पक्ष में ख्याति दी हो तो अन्य सम्पत्तियों की तरह इसे भी वसूली खाते में हस्तान्तरित किया जावेगा।
2) यदि स्थिति विवरण में ख्याति की राशि दी गई नहीं हैं तो इसका मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।
3) यदि ख्याति से कुछ राशि प्राप्त हो तो रोकड़ / बैंक खाते को डेबिट और वसूली खाते को क्रेडिट किया जायेगा।
4) यदि कोई साझेदार ख्याति लेने के लिए तैयार हो या इसे खरीद ले तो सम्बन्धित साझेदार की पूँजी खाते को डेबिट और वसूली खाते को क्रेडिट किया जायेगा।
5) यदि प्रश्न में ख्याति की वसूली का उल्लेख न हो तो यह माना जायेगा कि ख्याति का वसूली मूल्य शून्य है अर्थात् यह मूल्य विहीन है।

विशेष :– यदि बाह्य दायित्वों जैसे लेनदार, ऋण आदि के भुगतान के सम्बन्ध में कुछ लिखा ही नहीं हो तो इनका भुगतान पुस्तकीय मूल्य पर अवश्य ही वसूली खाते के डेबिट में दिखाना न भूलें।

विभिन्न प्रकार के संचयों के व्यवहार हेतु दिशा निर्देश

क्र. सं.	संचय का नाम	वसूली खाते में हस्तान्तरण	साझेदार के खाते में हस्तान्तरण
1	कर्मचारी क्षतिपूर्ति कोष (Worksmen Compensation Fund)	यदि क्षतिपूर्ति के लिए कोई दावा एवं क्लेम हो।	यदि क्षतिपूर्ति के लिए कोई दावा एवं क्लेम न हो।
2	निवेश उच्चावचन कोष (Investment Fluctuation Fund)	यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में निवेश उच्चावचन कोष भी हो तो।	यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में निवेश उच्चावचन कोष न हो तो।
3	संयुक्त जीवन पॉलिसी संचय (Joint Life Policy Reserve)	यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में संयुक्त जीवन पॉलिसी भी हो।	यदि स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में संयुक्त जीवन पॉलिसी न हो।
4	मशीन/प्लान्ट पुनःस्थापन कोष (Plant Replacement Fund)	–	जब मशीन/प्लान्ट स्थिति विवरण के सम्पत्ति भाग में न हो।
5	आकस्मिक कोष (Contingent Fund)	–	इसे सदैव ही साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तान्तरित किया जाता है।

SPECIMEN OF REALISIATION ACCOUNT

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Assets A/c (पुस्तक मूल्य) Building Machinery Furniture Stock Debtors Other Assets To Bank A/c (Realisation Exp. paid) To Bank A/c (Creditor B/P and other Lib. Paid) To Partners Capital A/c (Liabilites taken over) To Bank A/c (Premium paid) To Partner's Capital or Current A/c (if Profit) (BF)		By Sundry Liabilities (पुस्तक मूल्य) Creditors B/P Bank Loan Other Liabilities By Bank Account (Realisation value of Assets) By Partners Capital A/c (Assets taken over by Partners) By Partner's Loan A/c (Discount on his Loan) By Partner's Capital or current A/c (If Loss) (BF)	

बैंक अथवा रोकड़ खाता (Bank or Cash Account) : इस खाते के डेबिट पक्ष में प्रारम्भिक शेष सम्पत्तियों के विक्रय से प्राप्त राशि तथा साझेदारों द्वारा लाई राशियाँ लिखी जाती है तथा क्रेडिट पक्ष में दायित्वों तथा व्ययों के भुगतान तथा अन्य में

साझेदारों को किए गये भुगतानों की राशियाँ लिखी जाती है। प्रश्न में बैंक तथा रोकड दोनों शेष दिए हुए होने पर सुविधानुसार किसी एक खाते के शेष को अन्य में अन्तरित कर दिया जाना चाहिए।

साझेदारों के पूँजी खाते (Partner's Capital A/c) : इस खाते के क्रेडिट पक्ष में प्रारम्भिक शेष चालू खातों के जमा शेष, समापन पर लाभ में हिस्सा, दायित्वों का भार लेने पर सम्बन्धित दायित्व की राशि, संचय एवं अवितरित लाभ से हिस्सा तथा पूँजी की कमी को दूर करने के लिए लाई गई राशियाँ लिखी जाती है तथा डेबिट पक्ष में प्रारम्भिक नाम शेष, चालू खाते का नाम शेष, समापन पर हानि में हिस्सा, फर्म की सम्पत्ति लेने पर सम्बन्धित सम्पत्ति की राशि, अवितरित हानियों में हिस्सा तथा भुगतान की गई राशियाँ लिखी जाती है।

अन्य आवश्यक खाते (Other Required A/c) : फर्म के समापन पर साझेदारों के ऋण खाते, साझेदारों के चालू खाते, संचय तथा अवितरित लाभ या हानियों के खाते तथा सभी साथियों के दिवालिया होने पर न्यूनता खाता आदि तैयार किए जाते हैं।

उदाहरण 1 : तरुण एवं वरुण ने 31 दिसम्बर 2015 को फर्म का विघटन करने का निश्चय किया इस दिन इनका चिट्ठा निम्न प्रकार था।

Tarun and Varun decided to dissolve the firm. The Balance Sheet As at 31 Dec. 2015 was as follows.

Balance Sheet As on 31 Dec., 2015

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors		Cash in hand	10,000
B/P	1,20,000	Debtors	1,00,000
G/R	20,000	Stock	4,00,000
Varun's Loan	30,000	Furniture	10,000
Capital :	1,10,000	Machinery	2,80,000
Tarun 400000		Building	80,000
Varun 200000	6,00,000		
	8,80,000		**8,80,000**

साझी बराबर में लाभ विभाजन करते हैं। सम्पत्तियों की वसूली इस प्रकार होती है– देनदार ₹ 84,000, स्टॉक ₹ 3,60,000, मशीन ₹ 2,24,000, भवन ₹ 1,20,000, लेनदारों को 5 प्रतिशत बट्टे पर चकाया गया और ₹ 6000 वसूली खर्च चुकाए गए।

They distributed profit equally. Asset's were realised as follows : Debtor's ₹ 84,000, stock ₹ 3,60,000, Machine ₹ 2,24,000, Building ₹ 1,20,000 and paid to Creditors on 5% Discount in full settelment. Realisation Expenses ₹6000/- paid. Prepare necessary journal entries and accounts.

हल :

Journal

Date	Particulars		LF	Amount ₹ Debit	Amount ₹ Credit
2015	Realisation A/c	Dr.		8,70,000	
31 Dec.,	To Stock A/c				4,00,000
	To Debtors A/c				1,00,000
	To Furniture A/c				10,000
	To Machinery A/c				2,80,000
	To Building A/c				80,000
	(Balance transfer to realisation A/c)				
	Creditor's A/c	Dr.		1,20,000	
	B/P A/c	Dr.		20,000	
	To Realisation A/c				1,40,000
	(Balance transfer to Realisation A/c)				
	Cash A/c	Dr.		7,88,000	
	To Realisation A/c				7,88,000
	(Realised from Assets)				
	Realisation A/c	Dr.		1,34,000	
	To Cash A/c				1,34,000
	(Liabilities Paid)				
	Realisition A/c	Dr.		6,000	
	To Cash A/c				6,000
	(Real. Exp. Paid)				
	Tarun's Capital A/c	Dr.		41,000	
	Varun's Capital A/c	Dr.		41,000	

	To Realisation A/c (Realisation loss transferred)			82,000
	Gen. Reserve A/c Dr. To Tarun's Capital A/c To Varun's Capital A/c (G/R distributed)		30,000	15,000 15,000
	Varun's Loan A/c Dr. To Cash A/c (Loan paid)		1,10,000	1,10,000
	Tarun's Capital A/c Dr. Varun's Capital A/c Dr. To Cash A/c. (Final payment made)		3,74,000 1,74,000	5,45,000

Realisation A/c

Date	Particulars	Amount ₹	Date	Particulars	Amount ₹
2015	To Debtors A/c	1,00,000	2015	By Creditor's A/c	1,20,000
Dec., 31	To Stock A/c	4,00,000	Dec., 31	By B/P A/c	20,000
	To Furniture A/c	10,000		By Cash A/c	7,88,000
	To Machinery A/c	2,80,000	Dec., 31	Debtor's 84,000	
	To Building A/c	80,000		Stock 3,60,000	
				Machinery 2,24,000	
Dec., 31	To Cash A/c	1,34,000		Building 1,20,000	
	Creditor's 1,14,000			By Capital A/c	82,000
	B/P 20,000			Tarun's 41,000	
Dec., 31	To Cash A/c (Exp.)	6,000	Dec., 31	Varun's 41,000	
		10,10,000			10,10,000

Partner's Capital A/c

Particulars	Tarun ₹	Varun ₹	Particulars	Tarun ₹	Varun ₹
To Realisation A/c	41,000	41,000	By Balance b/d	4,00,000	2,00,000
To Cash A/c	3,74,000	1,74,000	By General Reserve	15,000	15,000
(Final Payment B/F)	4,15,000	2,15,000		4,15,000	2,15,000

Varun's Loan A/c

To Cash A/c	1,10,000	By Balance b/d	1,10,000
	1,10,000		1,10,000

Cash A/c

To Balance b/d	10,000	By Realisation A/c (Lib paid)	1,34,000
To Realisation A/c	7,88,000	By Realisation A/c (Exp.)	6,000
(Sundry Assets)		By Varun's Loan A/c	1,10,000
		By Tarun's Capital A/c	3,74,000
		By Varun's Capital A/c	1,74,000
	7,98,000		7,98,000

उदाहरण 2 :— मैसर्स ए, बी एण्ड ब्रदर्स ने 31 दिसम्बर, 2012 को फर्म को विघटित कर दिया उस दिन उसके सम्पत्ति एवं दायित्व निम्न प्रकार थे। M/s A, B and Bros. dissolove the firm on 31 Dec., 2012, B/S are as follows.

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Trade Creditors	5000	Cash in Hand	900
B's Loan	8000	Furniture	600
General Reserve	1800	Book Debts	4000
Capital A 10,000		Stock in Trade	1600
B 5,000	15000	Investment	4000
A's Current A/c	3600	Land & Building	21000
		Goodwill	500
		B's Current A/c	800
	33,400		33,400

फर्नीचर को इसके मूल्य के 2/3 भाग के मूल्य पर B ने रख लिया। पुस्तक ऋण से केवल 50 प्रतिशत ही प्राप्त हुआ, स्टॉक को ₹ 1000 में बेच दिया तथा भूमि व भवन को बेचने पर ₹ 3000 की हानि हुई। विनियोग A द्वारा पुस्तक मूल्य के 90 प्रतिशत पर लिये गए। एक कार्यालय टाइपराइटर जो पुस्तकों में नहीं दर्शाया गया था, से ₹ 500 वसूल हुए (लागत ₹ 1000 की) व्यापारिक लेनदारों को 10 प्रतिशत बट्टे पर भुगतान कर दिया गया। ₹ 800 वसूली व्यय A द्वारा चुकाए गए। फर्म को बन्द करने हेतु जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए एवं आवश्यक खाते बनाइए।

B took furniture at 2/3 of its value. Book - debts realised at 50%, stock sold for₹ 1000 and a loss on sale of building ₹ 3000. Investment took by A at 90% of its book value. A typewriter costing ₹ 1000, which was not shown in the book, realized from it ₹ 500. Creditors are paid at 10% discount. A paid realisation expenses ₹ 800. Make necessary journal entries & accounts to close the books of firm.

Date	Particulars	L.F.	Amount ₹	
			Debit	Credit
2012 Dec., 31	Realisation A/c Dr. To Furniture A/c To Book Debt A/c To Stock in Trade A/c To Investment A/c To Land & Building A/c To Goodwill A/c (Assets transferred to realisation A/c)		31,700	 600 4,000 1,600 4,000 21,000 500
Dec., 31	Trade Creditor's A/c Dr. To Realisation A/c (Liabilities Transferred to realisation A/c)		5,000	 5,000
Dec., 31	Cash A/c Dr. To Realisation A/c (Realised from Assets)		21,500	 21,500
Dec., 31	Realisation A/c Dr. To Cash A/c (Creditor paid off)		4,500	 4,500
Dec., 31	A's Current A/c Dr. B's Current A/c Dr. To Realisation A/c (Partners took the assets)		3,600 400	 4,000
Dec., 31	Realisation A/c Dr. To A/s Current A/c (Realisation exp. paid by A)		800	 800
Dec., 31	A's Current A/c Dr. B's Current A/c Dr. To Realisation A/c (Realisation loss transferred)		3,250 3,250	 6,500
Dec., 31	B's Loan A/c Dr. To Cash A/c (B's Loan Paid off)		8,000	 8,000
Dec., 31	General Reserve A/c Dr. To A's Current A/c To B's Current A/c (General reserve transferred)		1,800	 900 900
Dec., 31	B's Capital A/c Dr. To B's Current A/c (Balance of Current A/c transferred)		3,550	 3,550
Dec., 31	A's Capital A/c Dr. To A's Current A/c (Balance on Current A/c transferred)		1,550	 1,550

Dec., 31	A's Capital A/c Dr. B's Capital A/c Dr. To Cash A/c (Balance of Capital A/c paid off)		8,450 1,450	 9,900

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Furniture A/c	600	By Trade Creditor's	5,000
To Book Debt's A/c	4,000	By Cash A/c	21,500
To Stock A/c	1,600	Book Debt 2000	
To Investment A/c	4,000	Stock 1000	
To Land & Building A/c	21,000	Land & Building 18000	
To Goodwill A/c	500	Typewriter 500	
To Cash A/c (Creditor's)	4,500	By A's Current A/c	3,600
To A's Current A/c	800	By B's Current A/c	400
		By Current A/c	6500
		A 3250	
		B 3250	
	37,000		37,000

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Current A/c	1,550	3,550	By Balance b/d	10,000	5,000
To Cash A/c	8,450	1,450			
	10,000	5,000		10,000	5,000

Partner's Current A/c

Particulars	A ₹	B ₹	Particulars	A ₹	B ₹
To Balance b/d	-	800	By Balance b/d	3,600	-
To Realisition A/c	3,250	3,250	By General Reserve	900	900
To Realisition A/c	3,600	400	By Realisation A/c	800	-
			By Capital A/c	1,550	3550
	6,850	4,450		6,850	4,450

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	900	By Realisation A/c	4,500
To Realisation A/c	21,500	By B's Loan A/c	8,000
		By A's Capital A/c	8,450
		By B's Capital A/c	1,450
	22,400		22,400

उदाहरण 3 :— **X, Y, Z** ने 1 जनवरी 2013 को साझेदारी व्यापार प्रारम्भ किया। उन्होंने लाभ–हानि 5 : 3 : 2 अनुपात में विभाजन करना तय किया। उन्होंने पूँजी क्रमशः ₹ 80,000, ₹ 60,000 व ₹ 40,000 विनियोजित की थी। साझेदार संलेख में पूँजी पर 5 प्रतिशत ब्याज का प्रावधान था। वर्ष 2013 का लाभ (पूँजी पर ब्याज लगाने से पूर्व) ₹ 40,000 हुआ। वर्ष के दौरान साझेदारों के आहरण क्रमशः ₹ 12,000, ₹ 16,000 एवं ₹ 8,000 के थे। साझेदारों के सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। अतः उन्होंने 31 दिसम्बर 2013 को फर्म के समापन का निर्णय लिया। सम्पत्तियों की बिक्री से ₹ 1,60,000 वसूल हुआ तथा रोकड़ ₹ 13,000 थी। ₹ 48,000 के लेनदार थे जिनको 10 प्रतिशत बट्टे पर भुगतान कर दिया गया। संचय ₹ 3000 थे। वसूली व्यय ₹ 1800 चुकाए। फर्म की पुस्तकें बन्द करने हेतु आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

हल : **Profit & Loss Appropriation Account For the year ending 31 Dec., 2013**

To Interest on Capital	9000	By Net Profit	40,000
X 4,000			
Y 3000			
Z 2000			
To Capital Account	31,000		
X 15,500			
Y 9,300			
Z 6,200			
	40,000		40,000

Partner's Capital A/c

Particulars	X ₹	Y ₹	Z ₹	Particulars	X ₹	Y ₹	Z ₹
To Drawings	12,000	16,000	8,000	By Balance b/d	80,000	60,000	40,000
To Balance c/d	87,500	56,300	40,200	By Interest on Capital	4,000	3,000	2,000
				By P & L App. A/c	15,500	9,300	6,200
	99,500	72,300	48,200		99,500	72,300	48,200
To Realisation	29,500	17,700	11,800	By Balance b/d	87,500	56,300	40,200
To Cash A/c	59,500	39,500	29,000	By Reserve A/c	1,500	900	600
	89,000	57,200	40,800		89,000	57,200	40,800

Memorandum Balance Sheet as on 31 Dec., 2013

Liabilites	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	48,000	Cash	13,000
Reserve	3,000	Sundry Assets (B/F)	2,22,000
Capital	1,84,000		
X 87,500			
Y 56,300			
Z 40,200			
	2,35,000		2,35,000

Realisation Account

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Assets	2,22,000	By Creditor A/c	48,000
To Cash A/c (Creditor's)	43,200	By Cash A/c (Sundry Assets)	1,60,000
To Cash A/c (Real. Exp.)	1800	By Capital A/c	59,000
		X 29,500	
		Y 17,700	
	2,67,000	Z 11,800	2,67,000

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	13,000	By Realisation A/c	43,200
To Realisation A/c	1,60,000	By Realisation A/c	1800
		By X Capital A/c	59,500
		By Y Capital A/c	39,500
		By Z Capital A/c	29,000
	1,73,000		1,73,000

उदाहरण 4 :— A, B तथा C साझेदार आपस में लाभ–हानि 3 : 1 : 1 के अनुपात में विभाजन करते हैं। 31 मार्च, 2010 को उन्होंने अपनी फर्म का समापन करने का निश्चय किया। इस तिथि को उनका चिट्ठा अग्र प्रकार है।

Balance Sheet As on 31 March, 2010

Liabilities	Amount ₹	Assets		Amount ₹
Creditors	6,000	Cash		3,200
Loan	1,500	Debtors	24,200	
Capital	44,500	Less : PBD	1200	23,000
A 27,500		Stock		7,800
B 10,000		Furniture		1,000
C 7,000		Sundry Assets		17,000
	52,000			52,000

यह निर्णय लिए गये :— (1) अ फर्नीचर ₹ 800 में लेता है और ₹ 20,000 के पुस्तक मूल्य के देनदारों को ₹ 17,200 में लेना स्वीकार करता है और साथ ही ₹ 6,000 के लेनदारों को भुगतान करता है। (2) ब स्टॉक ₹ 7,000 में तथा कुछ विविध सम्पत्तियों को ₹ 7,200 में लेता है। यह राशि पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम है। (3) स शेष विविध सम्पत्तियों को उनके पुस्तक मूल्य के 90 प्रतिशत मूल्य जिसमें से ₹ 100 छूट के कम करने के पश्चात् लेता है तथा फर्म के ऋण का भुगतान ब्याज सहित करना स्वीकार करता है। ऋण पर ब्याज ₹ 30 देने है जिनका पुस्तकों में कोई लेखा नहीं हुआ है। (4) समापन के व्यय ₹ 270 है। शेष देनदारों को पुस्तक मूल्य के 50 प्रतिशत पर एक संग्रहण एजेन्सी को बेच दिया। फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिए आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

हल :

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Assets	50,000	By Creditors	6,000
Debtor 24,200		By Loan	1500
Stock 7,800		By Provision for Bad debts	1200
Furniture 1000		By A's Capital A/c (800+17200)	18,000
Sundry Assets 17,000	6,000	By B's Capital A/c	14,200
To A's Capital Creditors	1,530	(Stock 7000+S. Assets 7200)	
To C's Capital A/c	270	By C's Capital A/c (S. Assets 8000)	8,000
(1500+30) Loan & Interest		By Cash A/c (Debtor 50% of 4200)	2,100
To Cash A/c (Exp.)		By Partners Capital A/c (Loss)	6,800
		A 4080, B 1360, C 1360	
	57,800		57,800

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To Realisation	18,000	14,200	8,000	By Balance b/d	27,500	10,000	7000
To Realisation	4080	1360	1360	By Real.	6,000	-	1530
To Cash A/c	11,420			By Cash A/c		5,560	830
	33,500	15,560	9360		33,500	15,560	9,360

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	3200	By RealisationA/c	270
To Realisation A/c	2100	By A's Capital A/c	11420
To B's Capital A/c	5560		
To C's Capital	830		
	11,690		11,690

विशेष :– ₹ 7,200 की सम्पत्तियों का मूल्य 7200 × 100 ⁄ 90 = ₹ 8000

अतः सी द्वारा ली गई सम्पत्तियों का मूल्य : 17000 – 8000 = 9000 × 90 ⁄ 100 = 8100 – 100 = ₹ 8000

साझेदार का दिवालिया होना

साझियों के पूँजी खातों में विघटन सम्बन्धी प्रविष्टियाँ करने के बाद यह सम्भव हो सकता है कि किसी साझी का पूँजी खाता डेबिट शेष बताने लगे। यदि वह साझी साहूकार है तो अपने पूँजी खाते के डेबिट शेष के बराबर राशि वह फर्म में ले आएगा और अपना हिसाब चुकता कर देगा। लेकिन ऐसे साझेदार को दिवालिया घोषित किया जा चुका है, तो वह फर्म के प्रति अपने सम्पूर्ण दायित्व का भुगतान नहीं कर सकेगा। इस घाटे की पूर्ति शेष साहूकार साझेदारों को करनी पडेगी। अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि इस घाटे को शेष साझी अपने लाभ विभाजन के अनुपात में वहन करे अथवा अपनी पूँजी के अनुपात में वहन करें।

सन् 1903 से पूर्व किसी दिवालिया साझेदार की पूँजी का घाटा अपने लाभ विभाजन के अनुपात में बांटते थे। लेकिन उस वर्ष इंग्लैण्ड के न्यायालय ने गार्नर बनाम मर्रे के मुकदमें में एक महत्वपूर्ण निर्णय देकर इस सम्बन्ध में साझेदार की पूँजी की कमी को शेष साहूकार साझेदार अपने पूँजी के अनुपात में वहन करेंगे, इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस मुकदमें एवं सिद्धान्त का विवरण अग्र लिखित है–

गार्नर बनाम मर्रे के मुकदमें के तथ्य

गार्नर, मर्रे और विल्किन्स साझी थे, जिनका लाभ–हानि अनुपात बराबर था। 30 जून, 1900 को फर्म का विघटन हुआ और फर्म की सम्पत्तियों को बेच दिया गया तथा लेनदारों को भुगतान कर दिया गया। यह सब हो जाने के बाद फर्म की स्थिति इस प्रकार थी–

दायित्व	पौण्ड	सम्पत्तियाँ	पौण्ड
गार्नर की पूँजी	2500	नकद	1916
मर्रे की पूँजी	314	विल्किन्सन की पूँजी का घाटा	263
		वसूली की हानि	635
	2814		2814

विल्किन्सन को दिवालिया घोषित कर दिया गया और उससे कुछ भी वसूल न हो सका। फर्म के प्रति विल्किन्सन का कुल दायित्व 263 पौण्ड + 635 पौण्ड का 1 ⁄ 3 = 475 पौण्ड बना । न्यायालय के सामने प्रश्न आया कि विल्किन्सन की पूँजी की हानि गार्नर और मर्रे किस अनुपात में बाँटे।

मुकदमें में दिया गया निर्णय :– इस मुकदमें में फैसला दिया गया कि दिवालिया साझी की पूँजी की कमी को शेष साझेदार उस पूँजी अनुपात में बाटेंगे, जो फर्म के विघटन से पूर्व बने अन्तिम आर्थिक चिट्ठे में दी हुई थी। यह फैसला इस आधार पर दिया गया था कि साझी के दिवालिया होने से जो हानि होती हैं वह व्यापारिक हानि से भिन्न होती है।

निर्णय का स्पष्टीकरण :– मुकदमें में दिए गए निर्णय के आधार पर दो बातें प्रकट होती हैं–

(1) दिवालिया साझी की पूँजी की कमी को शेष साहूकार साझी अपनी पूँजी के अनुपात में वहन करेंगे।

(2) साहूकार साझेदार वसूली की हानि में अपने भाग को नकद लाये।

पूँजी का अनुपात साहूकार साझेदारों की उस पूँजी के आधार पर निकाला जायेगा जो फर्म के विघटन से पूर्व बने नियमित चिट्ठे में दी हुई है।

उदाहरणार्थ :– यदि फर्म का चिट्ठा प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को बनता है तो अनुपात ज्ञात करने के लिए उस चिट्ठे में दी गई पूँजी ली जाएगी, जो फर्म के विघटन से पूर्व के 31 दिसम्बर को बनाया था। यह ध्यान रहे कि यह पूँजी अनुपात का आधार तभी बनेगा जबकि साझियों का पूँजी खाता अपरिवर्तनशील है।

यदि साझियों का पूँजी खाता परिवर्तनशील है तो साझियों के पूँजी खातों में चिट्ठे में दिए गए संचय लाभ–हानि खाते का शेष आदि का समायोजन किया जायेगा। (लेकिन समापन के समायोजन से पूर्व)। इसके बाद समायोजित पूँजी का जो अनुपात आएगा उसमें दिवालिया साझी की पूँजी का घाटा बांटा जाएगा। किन्तु यह ध्यान रहे कि वसूली के लाभ–हानि का वितरण करने से पूर्व किसी साझेदार के पूँजी खाते का डेबिट शेष है तो वह साझेदार दिवालिये साझेदार की न्यूनता वहन नहीं करेगा क्योंकि वह साहूकार है।

नोट :– स्पष्ट सूचना के अभाव में गार्नर बनाम मर्रे के नियम के आधार पर ही प्रश्न हल करना चाहिए।

गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू न होने पर :–

भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 में इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा गया है अतः शेष साहूकार साझेदार, दिवालिये साझेदार की न्यूनता को अपने लाभ–विभाजन अनुपात में वहन करेंगे।

उदाहरण 5 :– दीपक, कपिल और भरत 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ–हानि विभाजित करते हैं। 31 मार्च, 2014 को इनका चिट्ठा निम्न है–

Balance Sheet As on 31 March, 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	1,40,000	Cash	24,000
B/P	1,00,000	Debtors	1,20,000
General Reserve	54,000	Stock	1,80,000
P & L A/c	18,000	Building	3,84,000
Capital Deepak 2,64,000	4,20,000	Capital : Bharat	24,000
Kapil 1,56,000			
	7,32,000		7,32,000

उक्त तिथि को फर्म का समापन कर दिया गया, भवन एवं स्टॉक ₹ 5,28,000 में बेचे गए। वसूली व्यय ₹ 6000 है, देनदारों में से ₹ 3000 डूब गए, लेनदारों को पूर्ण भुगतान कर दिया गया। भरत दिवालिया हो गया तथा उसकी जायदाद से ₹ 5100 ही वसूल हुए। फर्म की पुस्तकों में वसूली खाता तथा साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए। गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू कीजिए। यह मानते हुए कि साहूकार साझेदार ''वसूली की हानि'' अपना हिस्सा नकद नहीं पायेंगे।

हल :

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Debtors A/c	1,20,000	By Creditors A/c	1,40,000
To Stock A/c	1,80,000	By B/P	1,00,000
To Building A/c	3,84,000	By Cash A/c (Assets Realised)	6,45,000
To Cash A/c	2,40,000	Building - 5,28,000	
Creditors 1,40,000		Debtor's - 1,17,000	
B/P 1,00,000		By Partners Capital A/c	45,000
To Cash A/c (Realisation Exp.)	6000	D 22,500, K-15,000, B- 7500	
	9,30,000		**9,30,000**

Partner's Capital A/c

Particulars	Deepak₹	Kapil₹	Bharat₹	Particulars	Deepak₹	Kapil₹	Bharat₹
To Balance b/d	-	-	24,000	By Balance b/d	2,64,000	1,56,000	
To Realisation	22,500	15,000	7,500	By Cash A/c			5,100
To Bharat Cap.	9000	5,400	-	By Gen.reserve	27,000	18,000	9000
To Cash A/c	2,68,500	1,59,600	-	By P&L A/c	9,000	6,000	3000
				By Deepak Cap.			9000
				By Kapil Cap.			5400
	3,00,000	**1,80,000**	**31,500**		**3,00,000**	**1,80,000**	**31,500**

कार्यशील टिप्पणी–भरत की पूँजी में कमी ₹14,400 को दीपक व कपिल के पूँजी अनुपात में (3,00,000 : 1,80,000), 5 : 3 में बाँटी गयी हैं।

पूँजी अनुपात की गणना

	दीपक ₹	कपिल ₹
Capital	2,64,000	1,56,000
+ Gen. Reserve	27,000	18,000
+ P&L A/c	9000	6000
	3,00,000	1,80,000

Cash A/c

Particulars	Amount₹	Particulars	Amount₹
To Balance b/d	24,000	By Realisation A/c (Creditors)	1,40,000
To Realisation A/c	6,45,000	By Realisation A/c (B/P)	1,00,000
To Bharat Capital A/c	5100	By Realisation A/c (Exp.)	6000
		By Deepak Capital	2,68,500
		By Kapil Capital	1,59,600
	6,74,100		6,74,100

उदाहरण 6 : A, B, C क्रमशः 5 : 3 : 2 के अनुपात में लाभ बाँटते हुए साझेदार हैं। 31 दिसम्बर 2013 को फर्म के समापन के पूर्व उनका चिट्ठा निम्न प्रकार है–

Balance Sheet As on 31 March, 2013

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Bills Payable	40,000	Cash at Bank	8000
Creditors	1,00,000	Bill's Receivable	32,000
Capital :	1,20,000	Debtor's	1,40,000
A 80,000		Stock	60,000
B 40,000		Capital of C	20,000
	2,60,000		2,60,000

A को सम्पत्तियों की वसूली एवं प्राप्त राशि का वितरण करने हेतु नियुक्त किया। जिसे प्राप्य विपत्र, स्टॉक व देनदारों से प्राप्त राशि का 5 प्रतिशत पारिश्रमिक देय है, उसने वसूली परिणामों की निम्न सूचना दी है–

प्राप्य विपत्र ₹ 30,000, देनदार ₹ 1,20,000, स्टॉक ₹50,000, लेनदारों के पूर्ण भुगतान में ₹ 94,000 चुकाए। देय विपत्रों की पूरी राशि चुकायी गई। वसूली व्यय ₹ 4000 हुए। सी दिवालिया हो गया तथा उसकी निजी सम्पत्तियों से केवल ₹ 4000 ही वसूल हो सके, यह मानते हुए कि गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू होता है। वसूली खाता एवं साझेदारों के पूँजी खाते बनाइए। साहूकार साझेदार वसूली की हानि की राशि नकद लेकर आयेंगे।

हल :

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Bill Receivable A/c	32,000	By Bill Payable A/c	40,000
To Debtors A/c	1,40,000	By Creditors A/c	1,00,000
To Stock A/c	60,000	By Cash A/c	2,00,000
To Cash A/c	1,34,000	B/R 30,000	
Creditors - 94,000		Debtors 1,20,000	
B/R - 40,000		Stock 50,000	
		By Partners Capital A/c (Loss)	40,000
To Cash A/c (Real. Exp.)	4000	A - 20,000	
To A's Capital	10,000	B - 12,000	
(Remuneration)		C - 8000	
	3,80,000		**3,80,000**

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To Balance b/d	-	-	20,000	By Balance b/d	80,000	40,000	-
To Realisation	20,000	12,000	8000	By Realisation	10,000	-	-
To C's Capital	16,000	8,000		By Cash A/c	20,000	12,000	4000
To Cash A/c	74,000	32,000		By A's Capital	-	-	16000
				By B's Capital	-	-	8000
	1,10,000	**52,000**	**28,000**		**1,10,000**	**52,000**	**28,000**

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	8000	By Realisation A/c	1,34,000
To Realisation A/c	2,00,000	By Realisation A/c	4000
To A's Capital A/c	20,000	By A's Capital A/c	74,000
To B's Capital A/c	12,000	By B's Capital A/c	32,000
To C's Capital A/c	4000		
	4,00,000		4,00,000

उदाहरण 7 :

A, B, व C बराबर के साझेदार थे। 31 मार्च, 2014 को उनकी पूँजी ₹ 2,40,000, ₹ 1,20,000 व ₹ 40,000 थी। इस तिथि को फर्म विघटन का निश्चय किया गया। विभिन्न सम्पत्तियों से ₹ 1,64,000 वसूल हुए। वसूली व्यय ₹4000, C दिवालिया घोषित हो गया तथा उससे ₹ 1 में से 40 पैसा ही वसूल हो सके। फर्म की पुस्तकें बन्द करने हेतु आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

हल : **Balance Sheet As on 31 March, 2014**

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Capital A/c	4,00,000	Sundry Assets (B.F.)	4,00,000
A 2,40,000			
B 1,20,000			
C 40,000			
	2,60,000		**2,60,000**

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Asset's	4,00,000	By Cash A/c	1,64,000
To Cash A/c (Exp.)	4000	(Assets Realised)	
		By Partners Capital A/c	2,40,000
		A 80,000	
		B 80,000	
		C 80,000	
	4,04,000		**4,04,000**

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To Realisation	80,000	80,000	80,000	By Balance b/d	2,40,000	1,20,000	40,000
To C's Capital	16,000	8000		By Cash A/c	80,000	80,000	16,000
To Cash A/c	2,24,000	1,12,000		By A's Capital			16,000
				By B's Capital			8000
	3,20,000	**2,00,000**	**80,000**		**3,20,000**	**2,00,000**	**80,000**

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Realisation A/c	1,64,000	By Realisation A/c	4000
To A's Capital A/c	80,000	By A's Capital A/c	2,24,000
To B's Capital A/c	80,000	By B's Capital A/c	1,12,000
To C's Capital A/c	16,000		
	3,40,000		**3,40,000**

फर्म के दिवालिया साझेदारों की स्थिति में अवयस्क साझेदार का दायित्व :–

साझेदारी अधिनियम के अनुसार फर्म के किसी अवयस्क साझेदार का दायित्व उसके द्वारा फर्म में लगाई गई पूँजी एवं अर्जित लाभों तक ही सीमित रहता है। फर्म के दायित्वों के भुगतान के लिए उसके द्वारा फर्म में लगी हुई पूँजी का ही प्रयोग किया जा सकता है। इस हेतु उसकी व्यक्तिगत सम्पत्तियों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है, यदि अवयस्क साझेदार को छोड़कर अन्य सभी साझेदार दिवालिया घोषित हो चुके हैं तथा अवयस्क साझेदार के पास पर्याप्त सम्पत्ति है तो भी अवयस्क साझेदार की व्यक्तिगत सम्पत्तियों का प्रयोग फर्म के दायित्वों के भुगतान हेतु नहीं किया जा सकता है।

उदाहरण 8 :

A, B, C क्रमशः 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ–हानि विभाजित करते हैं। 31 दिसम्बर, 2014 को फर्म का विघटन करने को सहमत हुए। उस तिथि को फर्म का चिट्ठा निम्न प्रकार था–

Balance Sheet As on 31 March, 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
A's Capital A/c	25,000	Cash	600
B's Capital A/c	15,000	Sundry Assets	36,000
		C's Capital Overdrawn	3400
	40,000		**40,000**

सम्पत्तियों से ₹ 30,000 प्राप्त हुए। स दिवालिया हो गया तथा उसकी निजी सम्पत्तियों से केवल ₹ 1200 ही प्राप्त हो सके। फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिए यदि गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू नहीं होता है।

हल :

Realisation A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Sundry Assets	36,000	By Cash A/c (Assets Realised)	30,000
		By Partners Capital A/c A 3000	
		B 2000	6,000
		C 1000	
	36,000		**36,000**

Partner's Capital A/c

Particulars	A ₹	B ₹	C ₹	Particulars	A ₹	B ₹	C ₹
To Balance b/d	-	-	3400	By Balance b/d	25,000	15,000	-
To Realisation	3000	2000	1000	By Cash A/c			1200
To C's Capital	1920	1280	-	By A's Capital			1920
To Cash A/c	20,080	11,720	-	By B's Capital			1280
	25,000	**15,000**	**4,400**		**25,000**	**15,000**	**4,400**

Cash A/c

Particulars	Amount ₹	Particulars	Amount ₹
To Balance b/d	600	By A's Capital A/c	20,080
To Realisation A/c	30,000	By B's Capital A/c	11,720
To C's Capital A/c	1200		
	31,800		**31,800**

सारांश (Summary)

फर्म व साझेदारी का समापन : (1) जब सभी साझेदार फर्म को समाप्त करने का समझौता कर ले, (2) जब सभी साझेदार या एक को छोड़कर अन्य सभी साझेदार दिवालिया घोषित हो जाये, (3) जब फर्म का कारोबार अवैध हो जावे, (4) जब किसी साझेदार ने ऐच्छिक साझेदारी को समाप्त करने की सूचना अन्य साझेदारों को दे दी हो, (5) जब न्यायालय द्वारा फर्म के समापन का आदेश दिया हो।

समापन के प्रकार : (1) समझौते द्वारा समापन, (2) अनिवार्य समापन, (3) नोटिस द्वारा समापन, (4) न्यायालय द्वारा समापन, (5) विशेष घटना होने पर समापन।

फर्म के समापन पर बनाये जाने वाले खाते : (1) वसूली खाता, (2) बैंक या रोकड़ खाता, (3) साझेदारों के पूँजी खाते, (4) अन्य आवश्यक खाते।

गार्नर बनाम मरे का नियम : इस नियम के अनुसार किसी साझेदार के दिवालिया होने पर शेष साहूकार साझेदार उसकी हानि पूँजी अनुपात में वहन करते हैं जिसकी गणना परिवर्तनशील पूँजी खाता निधि की दशा में समापन से सम्बन्धित मदों को छोड़कर शेष साहूकार साझेदारों के पूँजी शेष के आधार पर निकालते हैं।

फर्म के दिवालिया साझेदारों की स्थिति में अवयस्क साझेदार का दायित्व : साझेदारी अधिनियम के अनुसार फर्म के किसी अवयस्क साझेदार का दायित्व उसके द्वारा फर्म में लगाई गई पूँजी एवं अर्जित लाभों तक ही सीमित रहता है।

शब्दावली (Glossary)

फर्म का समापन (Dissolution of Firm) : समस्त साझेदारों के मध्य साझेदारी का समाप्त हो जाना।

साझेदारी का समापन (Dissolution of Partnership) : केवल साझेदारी समाप्त होती है, फर्म समाप्त होना आवश्यक नहीं।

वसूली खाता (Realisation Account) : समापन पर सम्पत्ति एवं दायित्वों का स्थानान्तरण कर वसूली का लेखा एवं विघटन पर जिस खाते के माध्यम से भुगतान किया जाता है। इस खाते का शेष साझेदारों में लाभ विभाजन अनुपात में वितरित किया जाता है।

"गार्नर बनाम मर्रे" (Garner vs. Murray) : यह दो साझेदारों का नाम है जिनके प्रसिद्ध वाद निर्णय के आधार पर विघटन राशि के वितरण हेतु नियम प्रतिपादित हुआ।

अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. समापन के समय डूबत ऋण खाते का शेष हस्तांतरित किया जाता है–
   (अ) देनदारों के खाते में (ब) डूबत ऋण खाते में
   (स) वसूली खाते में (द) पूँजी खाते में
   At the time of dissolution of the firm balance of bad debts A/c is transferred to.
   (a) Debtors A/c (b) Bad debts A/c
   (c) Realisation's A/c (d) Capital A/c
2. साझेदारी फर्म के विघटन पर हानियाँ सबसे पहले चुकायी जाएगी–
   (अ) लाभों में से (ब) साझेदारों के ऋण खातों में से
   (स) साझेदारों की पूँजी में से (द) साझेदारों के निजी साधनों से
   On the dissolution of partnership firm, losses will be charged first:
   (a) Out of Profit (b) From Partner's Loan A/c
   (c) From Partner's Capital A/c (d) From Partner's personal resources
3. फर्म के समापन पर ख्याति खाते को बन्द करने के लिए हस्तान्तरित किया जाता है–
   (अ) पुनर्मूल्यांकन खाते में (ब) साझेदारों के पूँजी खाते में
   (स) वसूली खाते में (द) लाभ–हानि खाते में
   On the dissolution of firm, to close goodwill A/c it is transferred to-
   (a) Revaluation's A/c (b) Partner's Capital A/c
   (c) Realisation A/c (d) Profit & Loss A/c
4. गार्नर बनाम मर्रे नियम के अनुसार एक दिवालिया साझेदार के पूँजी की न्यूनता शेष साहूकार साझेदारों में बाँटी जाती है
   (अ) लाभ–हानि अनुपात में (ब) वर्ष के आरम्भ के पूँजी अनुपात में
   (स) समापन के लाभ–हानि के पूर्व के पूँजी अनुपात में (द) बराबर अनुपात में
   In which ratio, capital deficiency of an insolvent partners is distributed among solvent partners, when Garner vs. Murray applies-
   (a) Profit - Loss Ratio (b) Opening Capital Ratio
   (c) Capital ratio before charging dissolution Profit & Loss (d) Equal Ratio
5. जब गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू होता है तब वसूली की हानि साझेदार वहन करेंगे–
   (अ) बराबर अनुपात में (ब) लाभ–हानि अनुपात में
   (स) पूँजी अनुपात में (द) उपरोक्त में से कोई नहीं
   When Garner vs. Murray law applies, realisation loss will bear by the partner's in-
   (a) Equal Raito (b) Profit & Loss Ratio
   (c) Capital Ratio (d) None of the above

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

1. एक फर्म के ₹ 50,000 के देनदारों से समापन पर ₹ 45,000 वसूल हुए। वसूली की जर्नल प्रविष्टि होगी ?
   On the dissolution of the firm from debtors worth ₹ 50,000 realised ₹ 45,000. Make necessary journal entry at the time of dissolution of the firm.
2. गार्नर बनाम मर्रे के मुकदमें में दिवालिया साझेदार कौन था तथा उसका घाटा किस अनुपात में बाँटा गया?
   What is the name of insolvent partner in Garner vs. Murray case, in which ratio his loss is distributed?
3. वसूली खाते से आप क्या समझते हैं ?
   What is Realisation account?
4. फर्म के समापन से आप क्या समझते हैं ?
   What is dissolution of partnership firm?
5. फर्म के समापन पर भुगतान का क्रम बताइए ?
   What is the sequence for payment at time of dissolution of firms?
6. न्यायालय द्वारा समापन से क्या आशय है ?
   What do you mean by dissolution by court ?
7. एक फर्म में साझेदारों की पूँजी ₹ 20,000, दायित्व ₹ 15,000 तथा रोकड शेष ₹ 1000, फर्म के समापन करने पर विविध सम्पत्तियों से ₹ 9000 वसूल हुए। वसूली से हानि होगी ?
   At the time of dissolution capital of the partners of the firm ₹ 20,000, liabilities ₹ 15,000 & cash balance ₹ 1000; amount realized from sundry assets ₹ 9,000. What is loss on realization?
   Ans. : ₹ 25,000

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. ''गार्नर बनाम मर्रे'' नियम को समझाइये?
   Explain Garner vs. Murray rule.
2. ''साझेदारी का समापन फर्म के समापन से भिन्न हैं।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए ?
   "There is a difference between dissolution of partnership and dissolution of firm". Explain this statement.
3. ए, बी व सी का लाभ विभाजन अनुपात 1 : 2 : 2 है तथा वसूली की हानि डेबिट करने से पूर्व पूँजी खाते के शेष क्रमशः ₹ 3000 (Dr.) ₹ 6000 (Cr.) तथा ₹ 2000 (Cr.) है। वसूली की हानि ₹ 5000. ए दिवालिया हो गया उसकी न्यूनता वहन करने की प्रविष्टि बनाओ?
   A, B and C profit sharing ratio is 1:2:2. Before debiting realisation loss partners capital A/c balance are ₹ 3000 (Dr.) ₹ 6000 (Cr.) and ₹ 2000 (Cr.) and realisation loss ₹ 5000. A became insolvent, give journal entry for bearing deficiency of A.
4. हिमी व श्रीकान्त साझेदार है। 31 मार्च, 2012 को साझेदारों की पूँजी क्रमशः ₹ 1,00,000 व ₹ 50,000 है तथा लेनदार ₹ 30,000 है इसी तिथि को फर्म के समापन पर सम्पत्तियों का वसूली मूल्य ₹ 90,000 है। समापन पर वसूली खाता बनाइये?
   Himi and Shreekant are partners, as on 31 March, 2012 there capital ₹ 1,00,000 and ₹ 50,000 and creditors ₹ 30,000. On that date firm dissolved and realisation value of assets are ₹ 90,000. Prepare Realisation Account on dissolution.
5. अनिवार्य समापन किन परिस्थितियों में होता है ?
   In which circumstances compulsory dissolution is happen?
6. साझेदारी फर्म के विघटन की रीतियाँ बताइये ?
   State the modesa of dissolution of a partnership firm.
7. साझेदारी के विघटन पर पूँजी खाते किस प्रकार बन्द किये जाते हैं ?
   How capital Accounts are closed on dissolution of partnership firm?
8. कोई दो परिस्थितियाँ बताइये, जिसके अन्तर्गत साझेदारी को विघटित किया जाता है ?
   State any two circumstances under which partnership is deemed to be dissolved.
9. फर्म के विघटन के समय वसूली खाता बनाने के नियम लिखिये ?
   State the rules of preparation of realisation account on dissolution of partnership firm.
10. कोई दो आधार बताइये, जिन पर न्यायालय फर्म के विघटन के आदेश दे सकता है ?
    State any two grounds on which a court can pass order for dissolution of firm.
11. कपिल एक साझेदार, ₹ 25,000 के लेनदारों को ₹ 22,000 में लेने को सहमत हुआ। फर्म के विघटन के समय आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिये ?
    Kapil one of the partner, agreed to take over the creditor's of ₹ 25,000 for ₹ 22,000. Pass necessary journal entry at time of dissolution of the firm.

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. वसूली खाते एवं पूनर्मुल्यांकन खाते में अन्तर बताइये ?
   What is difference between realisation account and revaluation account ?
2. फर्म का विघटन किन–किन परिस्थितियों में किया जा सकता है ?
   Under what circumstances a firm may be dissolved ?
3. गार्नर बनाम मर्रे नियम से क्या समझते हैं? स्थायी एवं परिर्वतनशील पूँजी पद्धतियों के अन्तर्गत यह कैसे लागू होता है, समझाइये।
   What do you mean by Garner vs. Murray rule, how it is applicable in case of fixed capital method and fluctuating capital method. Explain.
4. फर्म के विघटन पर हिसाब का निपटारा करने की लेखांकन विधि समझाइये ।
   Explain the method of accounting for settlement of accounts at the time of dissolution.

बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न सं.	1	2	3	4	5
उत्तर	C	A	C	C	B

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions)

1. रमेश, नरेश एवं महेश 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ का वितरण करते थे। 31 दिसम्बर 2014 को अपनी साझेदारी के समापन का निर्णय लेते हैं। इस दिन का चिट्ठा इस प्रकार हैं –

Balance Sheet As on 31 Dec., 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	20,500	Cash in Hand	6000

Mrs. Ramesh Loan	8000	Debtors	9000
Joint Life Policy fund	20,000	Joint Life Policy	14,000
		Investment	20,000
Capital		Stock	8000
Ramesh 50,000		Machinery	40,000
Naresh 10,000	60,000	Mahesh Capital A/c	11,500
	1,08,500		**1,08,500**

समापन पर निम्नलिखित लेनदेन हुए : (1) संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी को ₹ 15,000 में समर्पण किया। (2) रमेश ने विनियोग ₹ 17,500 में लिए तथा अपनी पत्नी के ऋण का भुगतान करने के लिए सहमत हुए। (3) नरेश ने ₹ 7500 में स्टॉक लिया तथा ₹ 5000 के देनदारों को ₹ 4000 में लिया। (4) मशीन से ₹ 50,000 वसूल हुए तथा शेष देनदारों को पुस्तक मूल्य का 50 प्रतिशत ही प्राप्त हुआ। (5) वसूली व्यय ₹ 1000 हुए। (6) ₹ 3000 के मूल्य के विनियोग जिनका पुस्तकों में लेखा–जोखा नहीं हुआ उनसे यही मूल्य वसूल हुआ। फर्म की पुस्तकें बन्द करने हेतु जर्नल प्रविष्टियाँ एवं आवश्यक खाते बनाइए।

Ans. : वसूली खाते का लाभ – ₹ 27,000

2. गोपेश एवं राकेश साझेदार हैं लाभ–हानि बराबर बाँटते हैं। उन्होंने साझेदारी व्यवसाय को विघटित करने का निश्चित किया। 31 मार्च 2011 को चिट्ठा निम्न प्रकार था–

Balance Sheet As on 31 Dec., 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	30,000	Bank	20,000
General Reserve	20,000	Debtors	40,000
Capital		Stock	20,000
Gopesh 44,000		Furniture	8000
Rakesh 44,000	88,000	Plant & Machinery	50,000
	1,38,000		**1,38,000**

सम्पत्तियों से वसूली निम्न प्रकार हुई : (1) गोपेश ने प्लांट एवं मशीन तथा फर्नीचर पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम पर लिया। (2) राकेश ने स्टॉक एवं ख्याति ₹ 35,000 में ली। (3) विविध देनदारों से ₹ 37,000 वसूल हुए। (5) लेनदारों को 5 प्रतिशत बट्टे पर भुगतान कर दिया। फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा आवश्यक खाते बनाइए।

3. X, Y और Z साझेदार हैं, जो लाभ–हानि को 2 : 2 : 1 अनुपात में बाँटते हैं। 31 मार्च 2010 को साझेदारी के विघटन को सहमत हुए। उस तिथि को फर्म का चिट्ठा निम्न प्रकार था।

Balance Sheet As on 31 March, 2010

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	2500	Cash at Bank	4500
General Reserve	5000	Debtors 6500	
Current A/c X	2500	Less P.F.B. & D.D. 500	6000
Current A/c Y	1500	Stock	5000
Capital	20,000	Investment	5000
X 10,000		Furniture	4000
Y 5000		Plant & Machinery	6000
Z 5000		Current A/c Z	1000
	31,500		**31,500**

प्लांट एवं मशीन से ₹ 10,000, फर्नीचर ₹ 5000, देनदारों से पूर्ण, स्टॉक से ₹ 4000 प्राप्त हुए। विनियोग Z द्वारा लिये गए (पुस्तक मूल्य पर)। लेनदारों को 10 प्रतिशत बट्टे पर भुगतान किया, वसूली व्यय ₹ 100 हुए। ₹ 550 की सम्पत्ति का पुस्तकों में लेखा नहीं किया गया था। जिसे X ने ₹ 450 में ले लिया। ₹ 100 का एक दायित्व पुस्तकों में दर्ज नहीं किया गया था। फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिए और आवश्यक खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते का लाभ – ₹ 2,500

4. तानु और मानु एक साझेदारी फर्म में 3 : 1 अनुपात में लाभों का विभाजन करते हैं। वे फर्म के समापन के लिए सहमत हुए। फर्म की सम्पत्तियों (₹ 2000 नकद को छोड़कर) से ₹ 1,08,500 वसूल हुए। समापन की तिथि पर फर्म के दायित्व व अन्य विवरण निम्न प्रकार थे– लेनदार ₹ 40,000, तानु का पूँजी खाता ₹ 1,00,000 (जमा), मानु का पूँजी खाता ₹ 10,000 (नामे), लाभ–हानि खाता ₹ 8000 नामे, वसूली खर्चे ₹ 1000। यह ज्ञात हुआ कि एक विनियोग जो कि ₹ 2000 के थे। पुस्तकों में नहीं लिखे थे, इसे एक लेनदार द्वारा ₹ 1500 में ले लिया। शेष लेनदारों को ₹ 36,500 का पूर्ण भुगतान किया गया। वसूली खाता, रोकड़ खाता एवं साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 9,000

5. राम, रहीम और करीम 2 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हुए साझी थे। उन्होंने 31 मार्च 2012 को समापन निर्णय लिया। उस दिन उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था–

Balance Sheet As on 31 March, 2012

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	4000	Cash in Hand	4000
Capital		Debtors 2600	2000
Ram 10,000	16,000	Less – P.F.B.D. 600	
Rahim 4000		Stock	4000
Karim 2000		Fixtures and other Assets	10,000
	20,000		**20,000**

वे साझेदारी के विघटन का निश्चय करते हैं। निम्नलिखित राशियाँ वसूल होती हैं– फिक्सचर्स व अन्य सम्पत्तियाँ ₹ 9000, स्टॉक ₹ 4520, देनदार ₹ 1800, लेनदारों को पूर्ण भुगतान में ₹3800 चुकाए। वसूली व्यय ₹ 120 हुए। फर्म की पुस्तकें बन्द करने के लिए आवश्यक खाते बनाइए।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 600

6. निम्नलिखित चिट्ठा मैसर्स राकेश एवं दीपक की 31 दिसम्बर, 2012 को स्थिति बताता है। वे अपने व्यापार का विघटन करने का निश्चय करते हैं, उनका चिट्ठा निम्न है–

Balance Sheet As on 31 December, 2012

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	1900	Stock	3600
General Reserve	1000	Book Debts	6000
Capital	9500	Furniture	200
Rakesh 5500		Plant & Machinery	900
Deepak 4000		Profit & Loss A/c	1700
	12,400		**12,400**

पुस्तक ऋण 7.5 प्रतिशत की हानि पर वसूल किये गये। स्टॉक ₹ 3000 में बेचा गया। प्लांट व मशीन ₹ 700 में बेचे गये और फर्नीचर ₹ 250 में बेचा। साझेदार लाभ–हानि का विभाजन बराबर अनुपात में करते हैं। विघटन पर आवश्यक खाते खोलिए।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 1200

7. X, Y और Z क्रमशः 4 : 3 : 3 के अनुपात में लाभ–हानि को बाँटते हुए एक फर्म में साझेदार है। 31 दिसम्बर, 2015 को साझेदारी का विघटन करने का निर्णय लेते हैं उनका चिट्ठा निम्न है–

Balance Sheet As on 31 Dec., 2015

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	80,000	Cash	6000
Capital	1,40,000	Debtors 90,000	
X 80,000		Less : P.F B.D. 5000	85,000
Y 60,000		Stock	1,20,000
		Z Overdrawn	9000
	2,20,000		**2,20,000**

Y को सम्पत्तियों की वसूली करने और प्राप्य राशि का वितरण करने के लिए नियुक्त किया गया। यह स्टॉक और देनदारों से प्राप्त राशि का 5 प्रतिशत पारिश्रमिक के रुप में प्राप्त करेगा तथा वसूली के समस्त खर्चे स्वयं वहन करेगा। Y वसूली के परिणाम की इस प्रकार रिपोर्ट करता है कि स्टॉक से ₹ 96,000 वसूल हुए, देनदारों से ₹ 72,000 वसूल हुए। लेनदारों को पूर्ण भुगतान में ₹ 76,000 चुकाये। ₹ 1000 के अदत्त लेनदार जो कि चिट्ठे में शामिल नहीं है, चुकाये गये। Z दिवालिया हो गया, उसकी जायदाद से ₹ 7720 से प्राप्त हुए। गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू होता है, वसूली खाता, पूँजी खाते एवं रोकड़ खाता बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 42,400

8. A, B और C साझेदार है जो लाभ–हानि 5 : 3 : 2 के अनुपात में बाँटते हैं। 31 मार्च 2008 को व्यवसाय समाप्त कर दिया गया, तब चिट्ठा निम्न हैं– **Balance Sheet As on 31 March, 2008**

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	2,00,000	Cash at Bank	10,000
Capital	1,40,000	Debtors	90,000
A 20,000		Stock	1,20,000
B 80,000		Motor Car	20,000
C 40,000		Machinery	1,00,000
	3,40,000		**3,40,000**

मशीन से ₹ 50,000 एवं स्टॉक से ₹ 36000 वसूल हुए। मोटरकार B द्वारा ₹ 24000 में ली गयी। देनदारों से ₹ 40,000 वसूल हुए। किसी भी साझेदार की पूँजी की कमी अन्य साझेदारों द्वारा लाभ विभाजन अनुपात में वहन की जायेगी। A दिवालिया हो गया, उससे कुछ भी राशि प्राप्त नहीं हो सकी। आवश्यक खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 1,80,000

9. राम और श्याम के मध्य साझेदारी का 31 मार्च 2010 को विघटन हो गया। राम की पूँजी ₹ 17000 और श्याम की पूँजी ₹ 3000 थी। ₹ 2000 श्याम द्वारा फर्म को देय थे। ₹ 10,000 फर्म द्वारा राम को देय थे और ₹ 20,000 लेनदारों को देय थे। फर्म की पुस्तकों में नकद और फर्नीचर क्रमशः ₹ 300 एवं ₹ 1200 पर दिखाये गये थे। लाभ–हानि क्रमशः 2 : 1 के अनुपात में विभाजित करते थे। उक्त दायित्वों का प्रतिनिधित्व करने वाली सम्पत्तियों से ₹ 40,000 (नकद और फर्नीचर तथा श्याम द्वारा ₹ 2000 देय के अलावा) वसूल हुए। फर्नीचर राम द्वारा ₹ 800 की कीमत पर ले लिया गया। दायित्वों का पुस्तक मूल्य पर निपटारा कर दिया गया। वसूली खर्च ₹ 200 थे। विघटन की तिथि को वसूली के पहले का चिट्ठा और विघटन पर आवश्यक खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 7100

10. 31 मार्च 2014 को राम, श्याम एवं मोहन का चिट्ठा निम्न था–

Balance Sheet As on 31 March, 2014

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	40,000	Cash at Bank	12,000
General Reserve	30,000	Debtors	20,000
Capital	80,000	Stock	40,000
Ram 50,000		Plant & Machinery	40,000
Shyam 30,000		B/R	20,000
		Mohan Capital overdrawn	18,000
	1,50,000		**1,50,000**

मोहन दिवालिया हो गया, वह केवल ₹ 4000 का ही भुगतान कर सका। साझेदारी विघटन का निश्चय किया गया। सम्पत्तियों से निम्न प्रकार वसूली हुई – विविध देनदार ₹ 1,50,000, प्राप्य विपत्र ₹ 14,000, स्टॉक ₹ 32,000, प्लांट एवं मशीनरी ₹ 28,000, समापन व्यय ₹5000 हुए। फर्म की पुस्तकें बन्द करने पर खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि – ₹ 36000

11. A, B और C एक फर्म में बराबर के साझेदार है। 31 मार्च 2012 को चिट्ठा निम्न था–

Balance Sheet As on 31 March, 2012

Liabilities	Amount ₹	Assets	Amount ₹
Creditors	90,000	Cash	10,000
Capital	1,10,000	Debtors	1,10,000
A 10,000		Stock	60,000
B 60,000		Goodwill	20,000
C 40,000			
	2,00,000		**2,00,000**

उक्त तिथि को फर्म का समापन हो गया। A दिवालिया हो जाता है, फर्म के देनदार से ₹ 80,000 व स्टॉक से ₹ 50,000 वसूल होते है। लेनदारों को पूर्ण भुगतान में ₹ 86,000 चुकाये गये। वसूली व्यय ₹ 4000 थे। A से कुछ भी वसूल नहीं हो सका। वसूली खाते, साझेदारों के पूँजी खाते व रोकड़ खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि ₹ 60,000

12. कपिल, भरत, विवेक और भावेश बराबर के साझेदार है, 31 मार्च 2006 को फर्म का समापन हो गया। इस तिथि का चिट्ठा निम्न है–

Balance Sheet As on 31 March, 2006

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Creditors	16,000	Debtors	50,000
Bank overdraft	4000	Stock	30,000
Capital	90,000	Kapil Capital overdrawn	20,000
Vivek 60,000		Bharat Capital overdrawn	10,000
Bhavesh 30,000			
	1,10,000		**1,10,000**

देनदारों से पुस्तक मूल्य का 20 प्रतिशत कम वसूल हुआ। स्टॉक केवल ₹ 4000 में ही बेचा जा सका। ₹ 2000 का संदिग्ध दायित्व था, जिसका पुस्तकों में लेखा नहीं हुआ जिसके लिये ₹ 1600 चुकाने पड़े। A दिवालिया हो गया, उससे केवल ₹ 6000 वसूल हुए। वसूली व्यय ₹ 4800 हुए। गार्नर बनाम मर्रे नियम लागू करते हुए आवश्यक खाते बनाइये।

Ans. : वसूली खाते की हानि ₹ 42,400